कृतज्ञता ज्ञापन

अति गम्भीर, जटिल, शोधपरक, शोधप्रबन्ध हेतु गुरूजनों, आत्मीयजनों, शुभचिन्तकों के अमूल्य दिशा-निर्देशों, सतत् प्रेरणा प्रोत्साहन के अभाव में असम्भव है। प्रत्यक्षतः परोक्षतः सभी शुभाकांक्षियों प्रति मैं कृतज्ञता शापित न कर सका तो मेरी घोर कृतघ्नता होगी ...... मार्गदर्शन, प्रेरणा, प्रोत्साहन, आत्मीय संबल के अभाव में किसी भी कार्य को पूर्ण करना दुष्कर ही नहीं, असंभव होता है। यह मेरा सौभान्य रहा है कि मुझे प्रोफेसर लता सुमंत का मातृत्व आशीष एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मैं विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि उनका प्रेम, अवलम्ब, सतत् मुझे प्रेरणा, प्रोत्साहन, सम्यक दृष्टि प्रदान करता रहा। इनके प्रति शब्द आभार मुझे असीम लगते हैं। इस शोध प्रबन्ध में जो कुछ भी श्रेयस है वह सब उन्हीं का है एवं समस्त न्यूनताओं का दायित्व मुझ पर है। यही कामना करता हूँ कि इसी भाव से भावी जीवन में भी मुझे स्नेहाभिकित कर कृतार्थ करते रहेगें।

प्रस्तुत शोध यात्रा के दौरान श्रद्धेया गुरूवर प्रो. लता सुमंत,हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौ़दा, प्रो.कल्पना गवली मैम हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रो.दक्षा मिस्त्री पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, श्रद्धेय प्रो.दीपेन्द्र सिंह जाडेजा, श्रद्धेय कनुभाई निनामा सह आचार्य,श्रद्धेय डॉ. मनोज पण्ड्या, सह आचार्य श्री गोविन्द गुरु, राजकीय महाविद्यालय, बाँसवाड़ा, डॉ.नरेन्द्र पानेरी परीक्षा नियंत्रक, गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय बाँसवाड़ा, डॉ. नीतू परिहार हिंदी विभागाध्यक्ष मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर का सदैव मार्गदर्शन, प्रेरणा, अवलम्ब, मेरा सबसे बड़ा सहारा बना, हृदय से मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

प्रातः स्मरणीय ताऊ-ताई, माता-पिता, अग्रज श्री बापुलाल खज्जा, कैलाश चन्द्र खज्जा एवं मेरी बहन रक्षा ठाकोर व जिजाजी प्रदीप सिंह ठाकोर अन्य परिवारजनों जिन्होंने सदैव मुझे सत्य पथ पर निर्दिष्ट किया, अन्तर्दृष्टि प्रदान की, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन उनके उपकारों से स्वयं को मुक्त करने की कुचेष्टा की होगी।

और विशेषतः पग-पग पर, हर समय, हर घड़ी साथ, सम्बल प्रदान करने वाले मित्र प्रवीण सक्सेना, डॉ. विदुषी आमेटा, स्मृति मौर्य, सुगंधा काकेड़,आशा साल्वे, मीरा मनवर, पत्नी रेखा खज्जा,पुत्र हित खज्जा के प्रति मौन निवेदित हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु जिन पुस्तकालयों का अमूल्य योगदान रहा उनमें श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित है, जिनके सौजन्य से शोध कार्य सरल व आसान बना ।

मानव से भूल होना स्वाभाविक है। इसलिए मेरे इस शोध प्रबन्ध में अगर कहीं भाव - भाषा या तथ्यों की न्यूनताऐं परिलक्षित हो जो समय की सीमा से बंधे होने के कारण है , तो वे मेरी अपनी है। इसके लिए पाठक मुझे क्षमा करें इसी आशा के साथ ....।

दिनांक :

स्थान : डूँगरा छोटा (बाँसवाड़ा) राजेश कुमार खज्जा